चतुर्थ अध्याय

रघुवीर सिंह के भावात्मक निबंधों का परिचय

चतुर्थ अध्याय

रघुवीर सिंह के साहित्य का सामान्य परिचय --

डा॰ महाराज कुमार रघुवीर सिंह एक ऐसे निबंधकार तथा गद्य-गीत लेखक हैं जिन्होंने अपने विषय का आधार ऐतिहासिक घटनाओं तथा मानवीय संवेदनाओं को बनाया है । आपके साहित्य में कलापक्ष तथा भावपक्ष का संयोग हुआ है फिर भी भावपक्ष ही अधिक निखरा हुआ है ।

आपने 'शेष स्मृतियाँ', 'जीवन कण', 'जीवन धूलि, तथा 'सप्तदीप' ग्रंथ लिखे । इनमें भावात्मक निबंध तथा गद्य-गीत संकलित हुअे हैं । आपके ऐतिहासिक ग्रंथों में 'पूर्व मध्यकालीन भारत', 'मालवा के युगान्तर', 'रतलाम का प्रथम राज्य', 'पूर्व आधुनिक राजस्थान' आदि महत्वपूर्ण और प्रसिध्द ग्रंथ हैं । आपने अंग्रेजी में भी कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे हैं । आपका 'शेष स्मृतियाँ' अंतिम ग्रंथ है इनमें पाँच भावात्मक निबंध संग्रहित हैं । यह आपकी महत्वपूर्ण साहित्य कृति है । इन निबंधों में लेखकने ऐतिहासिक पात्रों और घटनाओं का आधार लेकर मानवीय जीवन में होनेवाले उत्थान-पतन का चढाव - उतार का चित्र खींचा है । 'शेष स्मृतियाँ' में मुगल साम्राज्य के सम्राट शाहजहाँ से लेकर अंतिम सम्राट बहादुरशाह 'जफर' तक कि ऐतिहासिक घटनायें, मानवीय संवेदनाओं, भावना, आशा-आकांक्षाओं के हृदयग्राही चित्र अंकित किये हैं ।

आप इतिहास के उच्चकोटि के विद्वान हैं । साथ ही साहित्य में अभिरुचि होने के कारण इतिहास के पृष्ठों को भाव भरे रंगीन चित्रों में उतारा है । "शेष स्मृतियों" में भारत के वैभवशाली तथा गौरवपूर्ण

ऐतिहासिक तथ्यों पर अवलम्बित भव्य भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है । `[1]
इसमें मानसिक स्थिति, फुतहपूर सीकरी का ह्रास,देश प्रेम की रचनाएँ,देश की दुर्दशा,भारत भूमि के सौन्दर्य,विद्रोही जाति के चित्र अंकित किये हैं ।

हिन्दी साहित्य में भावात्मक निबंध में ऐतिहासिक रचना करनेवालों में आप एक मात्र लेखक हैं । इस दृष्टि से आपकी `शेष स्मृतियाँ` एक मात्र कृति है । आपकी रचनाएँ इतनी प्रौढ हुई हैं कि दूसरों को लेखनी उठाने का साहस ही नहीं हुआ । मुगलकालीन इमारतों का आधार लेकर लेखकने अपनी भावुकता का स्रोत बहाया है और पत्थरों के भीतर हृदय की कोमल धडकन का संचार किया है ।

रघुवीर सिंह के भावात्मक निबंधों का परिचय --

रघुवीर सिंह के भावात्मक निबंधों में अंतिम ग्रंथ `शेष स्मृतियाँ` में संग्रहीत पाँच भावात्मक निबंध हैं -- `ताज`, `एक स्वप्न की शेष स्मृतियाँ`, `अवशेष`, `तीन कब्रें`, और `उजड़ा स्वर्ग` ।

१ ताज --

`शेष स्मृतियाँ` में रघुवीर सिंह का `ताज` यह निबंध गद्य-काव्य का श्रेष्ठ उदाहरण है । इसमें लेखकने मानवीय इच्छायें, आकांक्षायें, स्वप्न की पूर्ति और अमर बनने की लालसा किस प्रकार मनुष्य को विफल करती है इसका वर्णन किया है । मनुष्य अपनी इच्छाओं के नुसार पिरेमिड, स्फिंक्स, बडे-बडे मकबरे, कीर्तियाँ, विजयद्वार आदि खडे करते है । यह मनुष्य के इच्छा के फल है । इतिहास भी अपनी स्मृति को चिरस्थायी बनाने की मानवीय इच्छा का एक प्रयत्न है । यों अपनी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए मनुष्य ने भिन्न भिन्न प्रयत्न किये है । मनुष्य अपनी विफलता का अनुभव नहीं कर पाने से वहीं खंडहर उसी पर आँसू बहाते हैं ।

`मनुष्य का मस्तिष्क विधाता की अद्वितीय कृति है । `[2] ताजमहल भी मानव मस्तिष्क की ऐसी ही अद्वितीय सफलता का एक अद्भूत उदाहरण है । ताज की वह नवनूतनता आज भी विद्यमान है, शताब्दियों से बहनेवाले आँसू ही

उस सुन्दर समाधी को धो-धोकर उसे उज्ज्वल बनाएँ रखते हैं ।

लेखकने शाहजहाँ और सम्राज्ञी मुमताज इन दोनों की अंतिम भेंट का वर्णन बहोत ही हृदयद्रावक किया है -- ` इस सांसारिक जीवन यात्रा की अपनी सहचरी प्राणप्रिया से अंतिम भेंट करने शाहजहाँ आया जीवन दीपक बुझ रहा था, फिर भी अपने प्रेमी को अपने जीवन सर्वस्व को लेकर पुन: एक बार लौ बढी, बुझने से पहले की ज्योति हुई, मुमताज के नेत्र खुले, अंतिम मिलाप था । `[3] भारत सम्राट शाहजहाँ की प्रेयसी मुमताज सदा के लिए इस लोक से बिदा हो चुकी । शाहजहाँ भारत का सम्राट जहान का शाह था परंतु वह भी अपनी प्रेयसी को जाने से नहीं रोक सका । होनी को कौन टाल सकता है ? इस उक्ति को चरितार्थ करती है ।

अपने प्रेयसी के दु:ख से शाहजहाँ के संतप्त हृदय से आह निकली ` वह सुन्दर शरीर पृथ्वी की भेंट हो गया, यदि कुछ शेष था तो उसकी वह सुखप्रद स्मृति, तथा उसकी स्मृति पर आहें, निश्वासें और आँसू ।[4] ` यह भौतिक जगत अचिरस्थायी होते हुओ भी शाहजहाँ के ` आँसू ` ताजमहाल के माध्यम से चिरस्थायी बने । शाहजहाँ अपने लिये नहीं अपनी प्रेयसी मुमताज के बारे में सोचता था कि उस चाँद की उन शुष्क हड्डियों पर एक ऐसा कब्र बनावे कि वह संसार भर के मकबरों का ` ताज ` हो । शाहजहाँ को सुझी कि वे अपनी प्रेयसी के स्मृति को तथा उसके प्रति अपने अगाध विशुध्द प्रेम को स्वच्छ श्वेत स्फटीक के सुचारू रूप में व्यक्त करें । उस अनुपम ताजमहल का वर्णन कोई भी नहीं कर सकता । लेखक स्वंय कहते है ये जड लेखनी क्या वर्णन करेगी ? सब कुछ समय के नुसार विलिन हो गया फिर भी वह सुन्दर मकबरा अपने सौन्दर्य से मनुष्य को लुभा रहा है । ऐसी अनुपम और अद्वितीय कला का सानी इस भूतल पर खोजे नहीं मिल सकेगा । ` ताजमहल ` के पूर्ण होने पर शहाँजहाँ की मन:स्थिति क्या हुई होगी इसका वर्णन अंकित किया है ।

इस निबंध में लेखकने ` ताजमहल ` के स्थापित होने का इतिहास ही बताया है । इतिहास के पात्रों और कल्पना के आधारपर मानवीय मन:स्थिति का वर्णन किया है । ताजमहल आज भी वैभवहिन होते हुओ अपनी सुन्दरता से और अतीत इतिहास से मनुष्य को लुभाता और रुलाता है । मानव जीवन की करुणा तथा

को चिरस्थायी बनाएँ हुऐ आज भी खडा है । लेखक कहते हैं जिस तरह मनुष्य दो आँसू गिरा देता है उसी प्रकार निसर्ग भी अप्रत्यक्ष कहीं से उस मकबरे पर आँसू गिरा देता है । दो प्रेमियों के स्मारक के रूप में ताजमहल को अक्षय सौन्दर्यपूर्ण स्वरूप प्राप्त हुआ है । दो प्रेमियों का प्रेम चिरस्थायी रूप में आज भी मनुष्य के स्मृतिपटल पर अंकित हुआ है ।

लेखकने ' ताज ' इस निबंध में सम्राट शाहजहाँ और सम्राज्ञी मुमताज इन दो प्रेमियों की करुण कथा को चित्रित किया है ।

२ एक स्वप्न की शेष स्मृतियाँ --

' फतहपूर सीकरी ', ' एक स्वप्न की शेष स्मृतियाँ ' इस निबंध का लक्ष्य है । इसमें अकबर के स्वप्न में फतहपूर सीकरी के ह्रास तथा वैभव का वर्णन अंकित हुआ है ।

अकबर ने राज्यश्री तथा साम्राज्य को पाने के लिये घोर तपस्या की थी । अनेकों भीषण संग्राम,हजारों पुरुषों का बलिदान करने के बाद ही उसे साम्राज्य प्राप्त हुआ था । जिस राज्यश्री को पाने में वृध्द तथा अनुभवी हुँमायू को असफलता मिली थी वही राज्यश्री अकबर के पैरों में लौटने लगी । एक महान साम्राज्य की सत्ता तथा सफलता के वातावरण में अकबर को ऐसी नशा चढी कि वह राज्यश्री के गोद में,स्वप्न में विचरने लगा । वह स्वप्न था, भारतीय स्थापत्य कला के इतिहास की एक महान घटना थी,मध्यकालीन भारतीय गगन का एक देदीप्यमान धूमकेतु था ।

लेखक स्वंय कहते हैं कि अकबर ने देखे हुए स्वप्न की शेष स्मृतियों को अंकित करना किसी के भी बस की बात नहीं है । अकबर ने स्वप्न में तपस्वी को देखा और संचित पुण्य की भीख माँगने निकल पडे । अकबर के पास सब कुछ वैभव था फिर भी अपनी विवशता,दु:ख को दूर करने के लिए पुण्य की आवश्यकता पडी । अकबर को तपस्वी ने मुँहमाँगा वरदान दिया ।

अकबर ने तपस्या और पुण्य के महत्व को महसुस नहीं किया । इसी कारण

उसने सोचा कि वह स्थान कितना सुन्दर है । वहाँ पर सुन्दर नगरी का निर्माण करें । राज्यश्री ने तुरंत अकबर का स्वप्न पूर्ण करने का प्रण किया । अल्लाउद्दीन का चिराग जैसे अद्भुत शक्ति का प्रयोग करके अकबर का मनोरथ पूर्ण किस तरह हुआ उसका वर्णन कल्पना के माध्यम से लेखकने किया है । अकबर का स्वप्न भंग हो गया और उसी तरह साम्राज्य का वैभव भी नष्ट हो गया ।

फतहपुर सीकरी एक ऐसी नगरी है जिससे जन्मकाल से ही सारा संसार मुग्ध हो जाता है । सीकरी अकबर की ही नहीं तत्कालिन भारत की एक स्मृति के रूप में रही है । विजय तोरण और बुलंद दरवाजा अकबर के विशाल हृदय का स्मृति चिन्ह है । लेखक कहते हैं यदि आज यह पत्थर अपने संस्मरण कहने लगे तो कितनी ही ऐतिहासिक घटनाओं को जान सकते हैं ।`[5] अकबर को जिस सभ्यता को एकत्र लाने में जिसकी खोज थी वह अंत तक नहीं मिला । अकबर काँच के टुकडे को पाकर ही आनंदित होता था । मुस्लीम और भारतीय सभ्यता में एकता स्थापित करना - यह एक स्वप्न था । बुलंद दरवाजे के सामने जो कब्र है वह उसी पुण्यात्मा की है जिसने मुगल साम्राज्य को बचाया था । आज भी सभी धर्मानुयायी इसी स्थान पर आकर पुण्य-लाभ की आशा रखते हैं ।

इस निबंध में जो `मस्जिद` का वर्णन है - यह मस्जिद एक अनोखी ऐतिहासिक घटना की याद दिलाती है । इस मस्जिद ने देखा कि एक भारतीय मुसलमान बादशाह उपदेशक के स्थान पर खडा होकर सच्चे मानव धर्म का प्रचार करने की प्रार्थना करता है । वह सम्राट था अकबर, परंतु वास्तविकता ठेस पहुँचने पर उसका स्वप्न भंग हो गया उसे ज्ञात हुआ` स्वप्न लोक का भौतिक संसार में कोई स्थान नहीं कि मनुष्य स्वच्छंदता से खेल सकता है ।`[6]

लेखकने अकबर के टुटे हुओ स्वप्न के माध्यम से स्पष्ट किया है कि टुटा हुआ हृदय कभी सुख के जगत् में विचर नहीं सकता । क्योंकि उस हृदय पर अनेक पीडाओं की पूरानी यादें हैं । उसे भूलकर नया हृदय तो ला नही सकते और टुटे हुओ हृदय को समेटे अपने भग्न स्वप्न संसार की स्मृति को उठाये नवीन स्वप्नलोक में विचरना असंभव बात है । अकबर के `दीवान खास` का वर्णन किया है । अकबर ने यहाँ के

महान स्तंभ के तरह ईश्वर एक है इस सत्य को पाया और दीन-ए-इलाही भक्न का निर्माण किया और इससे विश्वबंधुत्व की भावना जागृत करने का संदेश दिया । अकबर के माध्यम से मनुष्य के मन:स्थिति का वर्णन किया है । साम्राज्य का सम्राट था किंतु ऊँचे स्थान पर भी भौतिक संसार में विचरने की और सुख पाने की इच्छा से पीडित था । उसी प्रकार मनुष्य कितना भी उच्चासन पर बैठे वह भौतिक संसार के मोहजाल से छुटकारा नहीं पा सकता । अकबर ने साम्राज्य के संचालन कार्य को एक स्वप्न ही समझा और विलासिता को न भुलने के लिए स्वप्नागार की निर्मिति की ।

फतहपुर सीकरी में अकबर ने विलासिता में डुबकर शासन का कार्य किया था । वह सीकरी आज उजड गयी है । वहाँ जो युध्द हुओ उसमें पराजय पाकर भी उसी भस्म में सीकरी के खंडहर आज भी खडे हैं । अकबर जब स्वप्नलोक छोडकर भौतिक संसार में आया तब स्वप्न की शेष स्मृतियाँ रह गयी । लेखकने, अकबर का साम्राज्य विलासिता में डुबे स्वप्न में विचरना तथा स्वप्न भंग हो जाने का वर्णन चित्रित किया है । फतहपुर सीकरी - जिस नगरी का सौन्दर्य, ऐश्वर्य, विलास सब कुछ नष्ट हो गया और रह गयी स्वप्न की पूरानी यादें । लेखकने अकबर द्वारा मनुष्य की विलासी तथा ऐश्वर्य सुखपभोग की लालसा कभी तृप्त नहीं होती यह स्पष्ट किया है ।

सीकरी नगरी के महायुध्द में कितनी मनुष्यहानी हो गयी होगी । आज भी उस खंडहर में मनुष्य की कसनाएँ तथा आकांक्षायें जिन धनिकों तथा विलासियों की कामनाएँ पूर्ण करने के लिए निर्दयता के साथ कुचली गयी थी । वह सीकरी के खंडहर अपने गौरवपूर्ण अतीत को याद कर रो पडते हैं । सीकरी के वे खंडहर मानवीय आशा-आकाक्षाओं तथा इच्छाओं की स्मशान-भूमि है ।

जिस सम्राट ने सीकरी नगरी के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया था । वह नगरी जो पंद्रह वर्ष श्रृंगार पहने हुओ थी । आज वह खंडहर जीर्ण-शीर्ण, भारत के सम्राट अकबर के मृत्यु के बाद उसकी प्यारी नगरी शताब्दियों से धुल-धुसरित हो रही है । यही है वह नगरी सुन्दर नगरी जिसको अकबर ने बनवाया थी ।

३ अवशेष --

महाराज रघुवीर सिंह ने 'अवशेष' इस भावात्मक निबंध में आगरे के लाल किल्ले का भावानुकूल वर्णन किया है ।

'आगरा' महान मुगल सम्राट का प्यारा नगर है । 'सुन्दर से सुन्दर तथा कोमल से कोमल वस्तुएँ भी काल के एक चपेट से लुप्त हो जाती हैं ।'[7] आगरा कभी विशाल समृध्द भारत की राजधानी थी । आगरा एक ऐसा नगर है जिसकी शान 'ताजमहल' जो आज भी स्मृति स्मारक के रूप में खडा है । आगरे के लाल किल्ले को वह पत्थर अपने विगत् स्मृति पर रोते हैं । वह मस्जिद खोखला हो गया है । लेखक ने अपना मत व्यक्त करते हुओ कहा है -- 'एकाध व्यक्तियों को आते देखकर लगता है कि उसकी पुरानी स्मृतियाँ उसे वहाँ खींच लेते हैं ।'[8] रघुवीर सिंह जी ने लाल किल्ले का वैभवहीन वर्णन किया है -- 'उस निराशा से वह किल्ला सन्यांस लेता है क्यों कि न जाने कितने मनुष्य की सुखद घडियों की यह किल्ला अपनी यादें दिलाकर विनष्ट कर उस मनुष्य को भी रुलाता है ।'[9] लाल किल्ले में आज भी भौतिक संसार से जुडी हुओ उस सम्राट और सम्राज्ञी की आकांक्षायें, अतृप्त इच्छायें, जीवन की निराशमय घडियाँ, वह श्वेत पत्थर याद कर उँसासे भरते हैं । उस पत्थरों में उनकी आत्माएँ रोती हैं । वहाँ मृतात्माओं की अश्रुकण स्मृति के रूप में शेष रह जाती हैं ।

आगरे का लाल किल्ला मृतप्राय केवल कंकालवशेष रह गये हैं । सब कुछ भग्न हो गया है । जिस तरह मुगलों का उत्थान देखकर वैभवपूर्ण वह लाल किल्ला कभी हँसता था, पतन को देखकर रो पडता है । उस पत्थरों का हृदय टूट जाता है । परंतु सम्राट अपने में ऐश्वर्य विलास में मग्न होकर चिरनिद्रा में विलिन हो गये ।

लेखकने मानवीय तथा पत्थरों के हृदय की तुलना की है । पत्थर हृदयों में सजीवता प्रदान की है । मानव हृदय एक पहेली है हृदय की भावना, गहरी दरारें, अंधकार और प्रकाशपूर्ण बनाना अधिक कठीण काम है । कोई भी किसी के हृदय को पूर्णत: जान नहीं सकता । उस लाल को बनवाने के लिए सम्राटों ने किसानों पर अत्याचार किये होंगे और इस प्रकार धन इकठ्ठा करके अपनी स्मृति स्मारक के रूप

में अमर बनाना चाहा परंतु वह एक करुणाजनक हृदय की अमर कहानी बनकर एक स्मृति स्वरुपा लेकर आज विद्यमान है ।

अकबर अपनी व्यक्तित्व की विशेषता लेकर ही समाधि में विलिन हो गया । आज भी वह समाधि विश्वबंधुत्व की भावना को जागृत करने का संदेश देती है परंतु भारत उस आदर्श को प्राप्त नही कर सका । मानव जीवन पहेली है और उससे भी अधिक अबुझ वस्तु है विधि का विधान । कभी भी न टलनेवाला[10] । कर्म एक का और प्रायश्चित दूसरों को । इसका वर्णन किल्ले के माध्यम से किया है । कोई भी व्यक्ति सामान्य हो या सम्राट हो विधिवत उसके कर्म को पाप और पूण्य में तुला जाता है । परंतु व्यक्ति के संपर्क में आनेवाली हर चीज उसमें साझादार होती है । शायद इसी कारण पाप और पूण्य का भार उठाये वह ईंट और पत्थर अपनी पूरानी अतित के इतिहास को ताजा रखने के लिये अपनी करुण कहानी बताते दो आँसू गिरा देते है ।

इस किल्ले में बिखरे हुओ अवशेष का वर्णन करते हुए पाप और पूण्य का संबंध स्पष्ट करने का प्रयास किया है । यह किल्ला बनवाने के लिए सम्राटों ने निर्माताओं के लिए विलास और सुख की सामग्री एकत्र करने के लिए जो सहस्त्र दरिद्र और पीडित लोगों का हृदय कुचल दिया था । यह जो पाप है उसका प्रायश्चित यह भग्नावशेष के रुप में कर रहे हैं । विधि का नियम ही ऐसा है ।

तीन कब्रें --

महाराज कुमार रघुवीर सिंह का 'शेष स्मृतियाँ' में संग्रहीत 'तीन कब्रें' यह भावात्मक निबंध है । इसमें प्रेम,बलिदान,त्याग,तथा तपस्या का वर्णन अंकित किया है । इस निबंध के माध्यम से लेखकने मानवी जीवन तथा भौतिक संसार का जो सम्बन्ध है वह कितना कठोर और बंधनकारक रहा है यह स्पष्ट किया है । मानवी जीवन में प्रेम एक ऐसी चीज है जिसे पाकर भी खो देते है और उसे खोने पर उसके लिए तडपना,आहें भरना और रोना इसके सीवा कुछ शेष रह जाता है-उस दिन की भग्नावशेष की स्मृति ।

इस निबंध में जहाँगीर, नुरजहाँ और अनारकली इन तीनों के कब्रों का इतिहास बताया है। अकबर का पुत्र सलीम साम्राज्य का शाहजादा और अनारकली के प्रणय प्रसंग को चित्रित किया है। मानवी जीवन में प्रेम का जो कोमल भाव है उसे साम्राज्य के संसार में कोई स्थान नहीं है। मनुष्य के हृदय में दूसरों के प्रति जो भाव उमडता है और किसी कारणवश नियति उसे कुचल देती है इसका हृदय द्रावक वर्णन लेखकने किया है। अपना प्रेम अमर और चिरस्थायी बनाने के लिए अनारकली ने जीवित समाधी ली। परंतु उस समाधि में स्थित मृतात्मा आज भी अपनी आकांक्षायें, प्रेम भावना और भौतिक संसार से उनका जुडा हुआ संबंध पत्थरों के रुप में प्रकट करते हैं।

अनारकली के जीवित समाधी लेने पर सम्राट शाहजादा जहाँगीर के हृदय को चोट पहुँचने से उसका दिल टूटकर बिखर गया और शेष रह गयी सुनहले प्रेम स्वप्न की शेष स्मृतियाँ। सलीम सिंहासन पर बैठा। तब पुन: वह मृत प्रेम याद दिलाने लगा। वह अपने प्रेम की स्मृति स्मारक को देखने के लिए लालायित हो उठा और जहाँगीर ने अनारकली की समाधि रुपी स्मारक एक कब्र बनवायी और समाधि में वह जकड गया। जिस साम्राज्य का सम्राट की प्रेमपात्री अनारकली थी उसे संसार ने कब्र में भी सुखपूर्वक सोने नहीं दिया। `यह संसार कितना निष्ठूर, बेदर्दी कठोर है - मनुष्य के लिए` चोट खाये हुए मनुष्य को यह संसार अधिक रुला देता है।[११]

जहाँगीर अपनी प्रेयसी को याद करके रोता था, निराश होता था फिर भी संसार के प्रति उदासीन नहीं था। वह स्वप्न में देखता था किसी सुन्दर युवती ने उसे जगा दिया और उस प्रेम जगत में वह विचर रहा है। सुखद घडियों को पाने को उत्सुक होता रहता है परंतु वह तो स्वप्न था। नुरजहाँ ने पति के कर्तव्य पर आकांक्षापूर्ण हृदय से विजय पाकर भग्न हृदयवाले जहाँगीर को गले लगाया फिर भी इसी आनंद को पाकर उस भग्नावशेष की स्मृति को भूल नही सका। मनुष्य जीवन में जो पहली गहरी चोट खाता है उसे किसी भी तरह भूल नहीं पाता। किसी सुख को प्राप्त कर दर्द को भुलना तो दूर वह जीवनभर तडपतडप मर जाता है।

जहाँगीर ने नूरजहाँ के प्रति आत्मसमर्पण किया । भारतीय मानव जीवन पर भावों का दौरा पड गया । जहाँगीर ने अपनी सभी साम्राज्य सत्ता नूरजहाँ को अर्पित कर स्वयं बेहोश स्वप्न में विचर रहा था । नूरजहाँ ने जहाँगीर की रक्षा की और अपने हृदय में उसे स्थान दिया ताकि जहाँगीर की सत्ता, गौरव और शासन बच सके ।

अकबर के समय साम्राज्य पर मादकता छा रही थी, उसी फलस्वरूप जहाँगीर के समय भी साम्राज्य पर अंधकार छा रहा था । जहाँगीर का पुत्र शाहजहाँ ने ताजमहाल की स्थापना की । इसी समय जहाँगीर साम्राज्य के मोह में पडे थे । साम्राज्य पर वर्चस्व स्थापित करने के लिये जीवन के अंतिम क्षण तक भयंकर अन्धकार से टकराते रहे । प्रेम मंदिर और प्रेम विद्रोह के भीषण आग से निकला सोता - ताज । शाहजहाँ तथा संसार के समस्त दर्शकों के लिए उस प्रेम-ज्योति को छोड दिया । सचमुच जहाँगीर संसार का रक्षक हुआ लेकिन भीतर ही भीतर सुलगती आग ने खाक कर डाला ।

जहाँगीर के मरने के बाद नूरजहाँ ने सार्वजनिक जीवन से बिदा ली । नूरजहाँ ने जीवित मृत्यु का आलिंगन किया । जहान का नूर लुट गया और संसार को पता भी न लगा । आज भी उस श्वेत समाधि के भीतरी भाग में कब्र पर पडे हुए सुन्दर फूलों की सुगंध नूरजहाँ की अंतिम याद दिला देती है ।

एक ही नगर में स्थित बल्कि अलग अलग स्थान पर यह कब्रें अपनी अपनी प्रेमियों को याद कर रोते हैं । आज भी वह कब्रों में मृत प्रेम को याद करते हैं । संसार मृत्यु के बाद भी मनुष्य का पीछा छोडता नहीं । वह नूरजहाँ, अनारकली और जहाँगीर के प्रेम स्वरूपा स्मृति आज भी पुराने यादें और गहरे चोट को ताजा करती हैं । वह कब्रों के श्वेत पत्थर उसे याद करके रोते हैं और अपना मानवीय भावनाओंका इतिहास बताते हैं । नियति मनुष्य की आशा-आकांक्षायें, चिरसंयोग के सुख को नष्ट करती हैं । फिर रह जाता है वह चिर-वियोग और उस वियोग पर टपकानेवाले आँसू ।

इस निबंध में नूरजहाँ, अनारकली, और जहाँगीर ने साम्राज्य के लिए तथा प्रेम को अमर करने के लिए जीवन का बलिदान दिया, इसका वर्णन अंकित किया है । यहाँ कब्रें आज भी प्रेम का प्रतीक बनी हुई हैं ।

उजडा स्वर्ग --

`शेष स्मृतियाँ` में संग्रहीत अंतिम निबंध `उजडा स्वर्ग` है । इस निबंध में लेखकने मध्यकालीन भारत की जो दयनीय अवस्था थी उसका वर्णन किया है । मध्यकालीन भारत का युग एक ऐसा युग है जिसमें १८५७ का कसक का मानी का चाँद` बडे ही हृदयग्राही रूप में छिपा हुआ है ।

`उजडा स्वर्ग` में लेखकने मुगल साम्राज्य के आरंभ से लेकर अंत तक के उजडे हुए स्वर्ग को अंकित किया है । `आगरा का ताजमहल` जो अपना शोक व्यक्त करता है । मुमताज और शाहजहाँ का वह वैभवशाली साम्राज्य की मानसिक स्थिति का तथा जहाँगीर ,अनारकली और नूरजहाँ के प्रेम का दु:खपूर्ण अंत हुआ इसका वर्णन किया है ।

महाराज कुमार रघुवीर सिंह ने इतिहास के इतिवृत्त के आधारपर घटनाओं का उल्लेख किया है । मुगल साम्राज्य के सम्राट अपने ही वैभव में लीन रहते थे । इसी कारण साम्राज्य का पतन होते होते उस पर अंग्रेजों ने कब्जा किया ।

भावुक महाराज कुमार सिंह को दिल्ली का लाल किल्ला उजडा स्वर्ग दिखायी देता है । दिल्ली का अंतिम मुगल सम्राट बहादूरशाह ने उस किल्ले में अपना जीवन रोते रोते बिताया । भौतिक संसार में सुख न मिलने से अपना नाम `जफर` रखा । अपने दु:ख को भूलने के लिए कविता के कल्पनालोक में विचरने लगे । लेकिन बहादूरशाह का रोना कभी रुका नहीं । वे अंतिम घडी तक दु:खी और निराश थे । `उजडे स्वर्ग` में १८५७ की सामाजिक ,धार्मिक परिस्थितियों और मानवीय जीवन की करुणामय दशा का वर्णन चित्रित किया गया है । लेखकने इतिहास के अतीत का आधार लिया है । जहाँ शाहजहाँ ने स्वर्ग बसाया वहीं पर नरक तैयार हो गया । इसी सम्राटों के व्यवहार से जनसामान्य का जीवन भी निरस और रुखा हो गया ।

मुगल बादशाहों के शाहजादियों का जीवन दबा हुआ था । इसका वर्णन

नूरजहाँ की ` अंतिम ` घडी इस वर्णन में मिलता है । औरंगजेब के बाद मुहम्मदशाह और नादिरशाह ने दिल्ली पर कब्जा किया और उन्होंने दिल्ली को लूट लिया । तब वहाँ रहनेवाले लोगों की क्या दशा हुई इसका चित्रण है ।

महाराज कुमार रघुवीर सिंह ने पाप-पुण्य, सुख तथा दु:ख का समान होना ही विधि को आवश्यक लगता है । जो विधिवत नियति है उसे सुख का ज्यादा और दु:ख का न होना यह मंजूर ही नहीं है । इसलिए शायद दोनों का भार समान होना दैव को उचित मालूम होता है । कोई भी सामान्य व्यक्ति हो या सम्राट हो उसका जो साम्राज्य वैभव है उसमें ही अधिक मग्न रहने के कारण भौतिक संसार में जितनी भी क्रूर शक्तियाँ हैं वह उसे नष्ट करती है । बहादूरशाह का लाल किल्ला छोडना, हुमायूँ के मकबरे में पनाह लेना , कैद होकर बर्मा पहुँचना आदि का चित्रण किया है । अंग्रेजो ने मुगल बादशाह हुमायुँ को कैद किया और उसके सामने ही साम्राज्य का तहस-नहस कर डाला । हुमायुँ के बेटे को पकडकर बहादूरशाह के सामने ही गोली से मार दिया । इसी स्थिति को ` आँखों देखा हाल ` को महसूस करके ` जफर ` दु:खी होता था इसी अवस्था में ही बर्मा जाकर अँधेरी सुनसान रात्रि में ही भौतिक संसार से बिदा ली ।

दिल्ली पर अंग्रेजों ने कब्जा किया तब उस ` लाल ` किल्ले के भीतर जो मृतात्मा थे वह और भी दु:खी हो गये । वह फिर नष्ट हो गये, बिखरे गये । आज उस स्वर्ग का खंडहर ही दिखायी देता है । जिसमें दर्शक का हृदय मृत स्वर्ग के दिल की धडकन सुनता है सरसता का स्वाद पाता है और दर्शक को उस अँधेरे खण्डहर में कोहिनूर की ज्योति फैली हुअी जान पडती है । इसीलिए संसार कहता है ` अगर पृथ्वी पर स्वर्ग है तो यही है । यही है । यही ` [12] आज जो कंगाल और निर्जिव खण्डहर खडे हैं । वह चंद्र और सूर्य को देखकर अपना वैभव, अपने प्रेमी को याद करते दो आँसू बहा बहा कर ठंडी निश्वासें भरते हैं ।

` उजडा स्वर्ग ` में रघुवीर सिंहजी ने मुगल साम्राज्य का उत्थान और पतन का वर्णन करते हुओ प्रकृति का माध्यम अपनाया है । इतिहास काल में होनेवाले युध्द, उसका परिणाम जो सामान्य जनता पर हुआ उस दयनीय स्थिति का चित्र भी

अंकित किया है । शाहजहाँ से लेकर बहादूरशाह जफर तक का इतिहास इस निबंध के द्वारा सामने रखा है । इस निबंध में रघुवीर सिंह जी को सब कुछ उजडा हुआ, निराश, घोर पतन, ध्वंस, भग्नावशेष दिखायी देता है । अंत में वह मृतात्मा उस श्वेत पत्थरों में छिपी अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुये लगते हैं । सचमुच मानवी जीवन नियति के लिए इस भौतिक संसार का मनोरंजन का साधन बन चुका है । यह संसार मनुष्य को पल ,पल सता देता है । इसलिए रघुवीर को मनुष्य का जीवन ` उजडा हुआ स्वर्ग ` सा प्रतीत होता है ।

निष्कर्ष --

रघुवीर सिंह जी के ` शेष स्मृतियाँ ` इस पुस्तक में संकलित पाँच भावात्मक निबंध है । इस निबंध का विषय है ताजमहल, फतहपूर सीकरी, दिल्ली का लाल किल्ला, लाहौर की तीन कब्रें, आगरे का किल्ला । इनके उत्थान और पतन के उतार-चढाव का वर्णन किया है । मुगल साम्राज्य के शासक अपने ही वैभव में लिन रहने के कारण साम्राज्य पर अंग्रेजों ने कब्जा किया ।

शाहजहाँ ने प्रेम को अमर करने के लिए ताजमहल, बनवाया । नूरजहाँ , अनारकली तथा जहाँगीर ने जीवित समाधि ली । मनुष्य आज भी अतीत के इतिहास को याद कर रो पडता है । लेखक ने ऐतिहासिक घटनाओं के अतीत को काल्पनिक आवरणों से सँवारा है । अंत में लेखक को वह वैभवशाली स्वर्ग उजडा हुआ दिखायी देता है । फतहपूर सीकरी का ह्रास, दिल्ली और आगरे के लाल किल्ले का वैभव नष्ट हो गया, वही कब्रों में स्थित मृतात्मा के उमंगभरी निश्वासें अपने अतीत को याद करके आज भी रोते हुओ लगते हैं । रघुवीर जी ने जैसे मुगल सम्राटों के आमोद प्रमोद, ऐश्वर्य और भोग विलास का वर्णन किया है उसी तरह उनके जीवन में आनेवाले नैराश्य, उदासीनता, अवसाद, विषाद और घोर पतन का वर्णन अंकित किया है । इससे स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन में सुख और ऐश्वर्य सदा के लिए नहीं रहता क्योंकि मनुष्य उसी में ही अंधा बनता है । शायद इसी कारण ही दुःख ,नैराश्य और पतन- सुख और ऐश्वर्य के साथ-साथ रहता है और इसलिए रघुवीर सिंह ने मानवीय संवेदनाओं और भावनाओं को चित्रित किया है ।

आज भी वह खण्डहर स्मारक के रूप में खड़े हैं । अपने विगत इतिहास को याद करके वह श्वेत पत्थर रो पड़ते हैं । अपने साम्राज्य वैभव को नष्ट होते देखकर वह निराश और दु:खी होते हैं । लेखकने उस खण्डहर के रूप में मानवीय संवेदना और उनकी भावनाओं को सजीव रूप दिया है । सम्राट और सम्राज्ञी उसी खण्डहर के श्वेत पत्थरों में अपने जीवन की ` शेष स्मृतियाँ ` को याद करके रोते रहते हैं । मुगल साम्राज्य का अंतीम बहादूरशाह को कैद करके अंग्रेजों ने साम्राज्य पर कब्जा किया सब तहस - नहस कर दिया । वही मृतात्मा परकीयों की सत्ता राज्य करते देखकर रो पड़े क्योंकि मनुष्य को अपनी सत्ता के लोप की भावना असह्य होती है । किसी खंड के रूप में वह अपनी स्मृति बनाये रखना चाहता है । अमरत्व की अभिलाषा ` मनुष्य ` को सताती रहती है ।

लेखकने मानवीय भावना, इच्छाओं को कल्पना का रूप देकर ` शेष स्मृतियाँ , ` को अंकित किया है ।

संदर्भ सूची

	लेखक	पुस्तक	पृष्ठ क्र.
१	डॉ.रघुवीर सिंह	शेष स्मृतियाँ	२२
२	- वही -	- वही -	६२
३	- वही -	- वही -	६३-६४
४	- वही -	- वही -	६५
५	- वही -	- वही -	८३
६	- वही -	- वही -	८६
७	- ओमप्रकाश	साहित्य भारती - गद्य संग्रह	६
८	डॉ.रघुवीर सिंह	शेष स्मृतियाँ	१०१
९	- वही -	- वही -	१०२
१०	- वही -	- वही -	१०७
११	- वही -	- वही -	११५
१२	- वही -	- वही -	१५९